ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अक्तूबर-दिसम्बर, 2019

हमारा कथा-समय-2

₹50/-

- ***महेश कटारे :*** नव उपनिवेशवादी दौर में ग्रामीण संवेदना के कथाकार —डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह 137
- ***मिथिलेश्वर :*** कलमनुमा कैमरे का बारीक कारीगर —डॉ. कुमारी उर्वशी 140
- ***प्रियंवद :*** एक खिड़की जो अंदर की तरफ खुलती है —राकेश बिहारी 144
- ***रामधारी सिंह दिवाकर :*** बदलते ग्राम्य यथार्थ का कथा–संसार —जितेन्द्र कुमार 149
- ***राजेन्द्र दानी :*** समाज की अन्दरूनी पड़ताल करती राजेन्द्र दानी की कहानियाँ —डॉ. स्मृति शुक्ल 152
- ***नवनीत मिश्र :*** सामाजिक मूल्यों व पीढ़ियों में आ रहे मानवीय बदलाव के भारतीय कथाकार —आशीष सिंह 155
- ***हरिचरन प्रकाश :*** बदलते समाज की सच्ची तहरीरें —डॉ. स्मृति शुक्ल 159
- ***नवीन सागर :*** नवीन सागर एक बड़ी कहानी जैसे हैं, जिसका एक टुकड़ा हमने बयान किया, बाकी टुकड़ा कोई दूसरा बयान करेगा —शशिभूषण 165
- ***एस.आर. हरनोट :*** सामान्य जन के वज़ूद का कथाकार —डॉ. बी. मदन मोहन 168
- ***राजकुमार राकेश :*** ग्लोबल युग की 'एडवांस स्टडी' —नेहा साव 172
- ***शैलेन्द्र सागर :*** कहानियों में भूमण्डलीकृत समाज का झांकता यथार्थ —आशीष सिंह 175
- ***महेश दर्पण :*** डाइंग कल्चर के बहाने महेश दर्पण की कहानियों की पड़ताल —विष्णु चंद्र शर्मा 179
- ***योगेन्द्र आहूजा :*** युग की परिक्रमा कक्षा में घूमती कहानियां —संजीव कुमार 189
- ***राजू शर्मा :*** सत्ता और संबंधों की आंतरिक परत —राजीव कुमार 194
- ***जयनन्दन :*** समकालीन चेतना के कुशल शिल्पकार —अखिलेश्वर पांडेय 199
- ***सूरज प्रकाश :*** समकालीन जीवन–मूल्यों की शिनाख्त —उन्मेष कुमार सिन्हा 202
- ***राकेश कुमार सिंह :*** बंद कमरे में तूफ़ान समेटे बैठा हूँ —डॉ. शशिकला राय 206
- ***प्रभु जोशी :*** रेखाओं से रचे अनुभवों के शब्द–चित्र —डॉ. अल्पना सिंह 209
- ***कृष्ण बिहारी :*** किरदार जिन्हें कहानियाँ ढूँढ़ती हैं —डॉ. रत्नेश विष्वक्सेन 213
- ***रघुनन्दन त्रिवेदी :*** मध्यवर्ग का शोकगीत —श्रुति कुमुद 217

आवरण फोटो सौजन्य : सुशोभित सक्तावत, सहायक संपादक, अहा! जिंदगी, भोपाल

प्रधान संपादक* □ विजय राय
संपादक* □ ऋत्विक राय
संयुक्त संपादक* □ ऋतिका □ गीतिका शर्मा □ वत्सल कक्कड़

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर लखनऊ–***226010***
ईमेल : vijairai.lamahi@gmail.com, मो0 : ***9454501011***

इस विशेष अंक का मूल्य : 50/– रुपये मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 1000/–रुपये मात्र

''लमही का वेब अंक आप Not Nul (www.notnul.com) पर पढ़ सकते हैं।''

आजीवन सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'लमही' **(LAMAHI)** के नाम से इस पते पर भेजें– ***3/343***, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–***226010*** (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' और उसके संपादक–मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा

''लमही'' की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, *211* पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा *3/343*, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-*226010* से प्रकाशित।

संपादक–ऋत्विक राय*

*सभी अवैतनिक

वर्ष: 12 • अंक: 2 • अक्टूबर–दिसम्बर 2019

महेश कटारे

नव उपनिवेशवादी दौर में ग्रामीण संवेदना के कथाकार

■ डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

आज कहानियों की चर्चा–परिचर्चा महेश कटारे का नाम लिए बिना अधूरी सी जान पड़ती है। वे 1990 के बाद विकसित हो रहे भारतीय समाज को बहुत ही बारीकी से अपनी रचनाओं में जगह देते हैं। भारत किसानों का देश है और आज भी 60 फीसदी से अधिक आबादी खेती पर ही केन्द्रित है। खेती को आधार बनाकर अपनी आजीविका चलाने वालों की जरूरतें, समस्याएँ और उनके जीवन का दंश महेश कटारे के लेखन में उभरकर आता है। इसके साथ ही नये भूमण्डलीय परिवेश में आजीविका के लिए अपना गाँव छोड़कर शहर पलायन करने वाले नवयुवकों का जीवन संघर्ष उनकी लेखनी में मुखरित हुआ है। महेश कटारे ने कहानी, नाटक और यात्रा वृत्तांत जैसी हिन्दी की महत्त्वपूर्ण गद्य विधाओं को अपनी लेखनी द्वारा समृद्ध करने का प्रयास किया लेकिन हिन्दी साहित्य में वे एक कहानीकार के रूप में ही जाने जाते हैं। 'समर शेष है', 'इतिकथा–अथकथा', 'मुर्दा स्थगित', 'पहरुआ', 'छछिया भर छाछ', 'सात पान की हमेल' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं जिनमें छछिया भर छाछ, काँख में नदी, बकरबटा, इकाई, दहाई।।।, प्रेत–पग, गोद में गाँव, बाधा–दौड़, आदि पाप, तूर्यनाद, कोई पवित्र युद्ध, अंकगणित में विदूषक, कुकाल में हंटर, सपना तेरे लिए, बच्चों को सब बताऊँगी, सात पान की हमेल, अपनी–अपनी भूख, सपने जैसा सुख, अतिरिक्त से अकस्मात्, कॉलम, असमाप्त उपाख्यान, दरबार, दरीबा और दास्तान, गंगभोज आदि कहानियाँ काफी चर्चित रहीं। उनकी कहानियों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात साहित्यकार लीलाधर मंडलोई कहते हैं– ''महेश कटारे की कहानियाँ निपट आज के यथार्थ की होते हुए भी भीतरी सतहों में आने वाले समय की हैं। उनकी कहानियों में दरकते–घसकते ग्रामीण और क़स्बाई समाज को पढ़ते हुए भूमण्डलीकरण की दबिश से बिगड़ती ग्रामीण अर्थव्यवस्था का तिलिस्म समझ में आता है।'' (छछिया भर छाछ, फ्लैप से)

विवेच्य कथाकार की कहानियों में ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि में बसने वाले नवयुवकों की समस्याएँ, काम की तलाश में युवाओं का अपनी जमीन छोड़ना, सूखा, किसानों की बदहाली और आत्महत्याएँ, समाज में जाति–पाति का विभेद, दहेज समस्या, बाल विवाह, संयुक्त परिवार में स्त्री की पीड़ा, मिलावट, जमाखोरी, घूसखोरी आदि वर्ण्य विषय के रूप में समाहित हैं।

यदि उनकी कहानियों पर बात की जाए तो 'छछिया भर छाछ' ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित महत्त्वपूर्ण कहानी है जिसके माध्यम से रचनाकार भारतीय समाज में फैले जातिवाद को तोड़ने का प्रयास करता है। कथानायक रमैनी और नायिका रामरती के माध्यम से लेखक ने समाज में फैली कुरीतियों का पर्दाफाश कर स्वस्थ्य समाज के निर्माण की बात करता है। कहानी में भारतीय ग्रामीण समाज की जीवंत छवि उभरकर हमारे समक्ष आती है– ''यहाँ सरकारों का बदलना तक चार दिन में बासी हो जाता है किन्तु फौजदारी, रति–प्रसंग, भागना–भगाना प्रतिदिन नयापन पाते रहते हैं। सरकारें आने जाने में रस कम होता है कि किस जाति ने मैदान मारा, कौन–कौन खेत रहीं। बाक़ी पटवारी, कलेक्टर, थानेदार, चोर–डकैतों की सरकारें तो वही की वही होती हैं।'' (छछिया भर छाछ, पृष्ठ–13)

महेश कटारे

'काँख में नदी' कहानी में महेश कटारे ने भौजी के माध्यम से ऐसी भारतीय स्त्री के जीवन संघर्ष को रेखांकित किया है जो स्वावलम्बी होने के साथ–साथ परोपकारी भी है। पति की मृत्यु के बाद जब वह अपना जीवन स्वच्छन्दतापूर्वक जीना चाहती है तो हमारा समाज उसके गुणों का अनदेखा करते हुए उसे हेय दृष्टि से देखता है। 'ईकाई दहाई.....' में कथाकार ने दिखाया है कि बाजारवादी